



॥ श्री आशारामायण ॥

गुरु चरण रज शीष धरि, हृदय रूप विचार ।

श्री आशारामायण कहौं, वेदांत को सार ॥

धर्म कामार्थ मोक्ष दे, रोग शोक संहार ।

भजे जो भक्ति भाव से, शीघ्र हो बेड़ा पार ॥

भारत सिंधु नदी बखानी, नवाब जिले में गाँव बेराणी ।

रहते एक सेठ गुण खानि, नाम थाऊमल सिरुमलानी ॥

आज्ञा में रहती मंगीबा, पतिपरायण नाम मंगीबा ।

चैत वद छः* उन्नीस चौरानवे, आसुमल अवतरित आँगने ॥

माँ मन में उमड़ा सुख सागर, द्वार पै आया एक सौदागर ।

लाया एक अति सुंदर झूला, देख पिता मन हर्ष से फूला ॥

सभी चकित ईश्वर की माया, उचित समय पर कैसे आया ।

ईश्वर की ये लीला भारी, बालक है कोई चमत्कारी ॥

हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ ॥

संत सेवा औ' श्रुति श्रवण, मात पिता उपकारी ।

धर्म पुरुष जन्मा कोई, पुण्यों का फल भारी ॥

सूरत थी बालक की सलोनी, आते ही कर दी अनहोनी ।
समाज में थी मान्यता जैसी, प्रचलित एक कहावत ऐसी ॥
तीन बहन के बाद जो आता, पुत्र वह त्रेखण कहलाता ।
होता अशुभ अमंगलकारी, दरिद्रता लाता है भारी ॥
विपरीत किंतु दिया दिखायी, घर में जैसे लक्ष्मी आयी ।
तिरलोकी का आसन डोला, कुबेर ने भंडार ही खोला ।
मान प्रतिष्ठा और बढ़ायी, सबके मन सुख शांति छायी ॥
हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ ॥

तेजोमय बालक बढ़ा, आनंद बढ़ा अपार ।
शील शांति का आत्मधन, करने लगा विस्तार ॥
एक दिना थाऊमल द्वारे, कुलगुरु परशुराम पधारे ।
ज्यूँ ही वे बालक को निहारे, अनायास ही सहसा पुकारे ॥
यह नहीं बालक साधारण, दैवी लक्षण तेज है कारण ।
नेत्रों में है सात्त्विक लक्षण, इसके कार्य बड़े विलक्षण ॥
यह तो महान संत बनेगा, लोगों का उद्धार करेगा ।
सुनी गुरु की भविष्यवाणी, गद्गद हो गये सिरुमलानी ।
माता ने भी माथा चूमा, हर कोई लेकर के घूमा ॥
हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ ॥

जानी वैरागी पूर्व का, तेरे घर में आय ।
जन्म लिया है योगी ने, पुत्र तेरा कहलाय ॥
पावन तेरा कुल हुआ, जननी कोख कृतार्थ ।
नाम अमर तेरा हुआ, पूर्ण चार पुरुषार्थ ॥
सैंतालीस में देश विभाजन, सिंध में छोड़ा भू पशु औ' धन ।
भारत अमदावाद में आये, मणिनगर में शिक्षा पाये ॥
बड़ी विलक्षण स्मरण शक्ति, आसुमल की आशु युक्ति ।
तीव्र बुद्धि एकाग्र नम्रता, त्वरित कार्य औ' सहनशीलता ॥
आसुमल प्रसन्नमुख रहते, शिक्षक हँसमुखभाई कहते ।
दे दे मक्खन मिश्री कूजा, माँ ने सिखाया ध्यान औ' पूजा ॥
ध्यान का स्वाद लगा तब ऐसे, रहे न मछली जल बिन जैसे ।
हुए ब्रह्मविद्या से युक्त वे, वही है विद्या या विमुक्तये ।
बहुत देर तक पैर दबाते, भरे कंठ पितु आशिष पाते ॥
हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ ॥

पुत्र तुम्हारा जगत में, सदा रहेगा नाम ।

लोगों के तुमसे सदा, पूरण होंगे काम ॥

सिर से हटी पिता की छाया, तब माया ने जाल फैलाया ।
बड़े भाई का हुआ कुशासन, व्यर्थ हुए माँ के आश्वासन ॥
गये सिद्धपुर साधना करने, कृष्ण के आगे बहाये झरने ।
सेवक सखा भाव से भीजे, गोविंद माधव तब हैं रीझे ॥
एक दिना एक माई आयी, बोली हे भगवन सुखदायी ।
पड़े पुत्र दुःख मुझे झेलने, खून केस दो बेटे जेल में ॥
बोले आसु सुख पावेंगे, निर्दोष छूट जल्दी आवेंगे ।
बेटे घर आये माँ भागी, आसुमल के पाँवों लागी ॥
हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ ।

आसुमल का पुष्ट हुआ, अलौकिक प्रभाव ।

वाकसिद्धि की शक्ति का, हो गया प्रादुर्भाव ॥

बरस सिद्धपुर तीन बिताये, लौट अमदावाद में आये ।
करने लगी लक्ष्मी नर्तन, किया भाई का दिल परिवर्तन ॥
सिनेमा उन्हें कभी न भाये, बलात् ले गये रोते आये ।
जिस माँ ने था ध्यान सिखाया, उसको ही अब रोना आया ॥
माँ करना चाहती थी शादी, आसुमल का मन वैरागी ।
फिर भी सबने शक्ति लगाई, जबरन कर दी उनकी सगाई ॥
शादी को जब हुआ उनका मन, आसुमल कर गये पलायन ।
करत खोज में निकल गया दम, मिले भरूच में अशोक आश्रम ॥
कठिनाई से मिला रास्ता, प्रतिष्ठा का दिया वास्ता ।
घर में लाये आजमाये गुर, बारात ले पहुँचे आदिपुर ॥
विवाह हुआ पर मन दृढ़ाया, भगत ने पत्नी को समझाया ।
सांसारिक व्यौहार तब होगा, जब मुझे साक्षात्कार होगा ।
साथ रहे ज्युँ आत्मा-काया, साथ रहे वैरागी माया ॥
हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ ।

अनश्वर हूँ मैं जानता, सत चित हूँ आनंद ।

स्थिति में जीने लगूँ, होवे परमानंद ॥

मूल ग्रंथ अध्ययन के हेतु, संस्कृत भाषा है एक सेतु ।
संस्कृत की शिक्षा पायी, गति और साधना बढ़ायी ॥
एक श्लोक हृदय में पैठा, वैराग्य सोया उठ बैठा ।
आशा छोड़ नैराश्यवलम्बित, उसकी शिक्षा पूर्ण अनुष्ठित ॥

लक्ष्मी देवी को समझाया, ईशप्राप्ति ध्येय बताया ।
छोड़ के घर मैं अब जाऊँगा, लक्ष्य प्राप्त कर लौट आऊँगा ॥
केदारनाथ के दर्शन पाये, गुरु खोजत पग आगे बढ़ाये ।
आये कृष्ण लीलास्थली में, वृंदावन की कुंज गलिन में ।
कृष्ण ने मन में ऐसा ढाला, वे जा पहुँचे नैनिताला ॥
वहाँ थे श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठित, स्वामी लीलाशाह प्रतिष्ठित ।
भीतर तरल थे बाहर कठोरा, निर्विकल्प ज्यूँ कागज कोरा ।
पूर्ण स्वतंत्र परम उपकारी, ब्रह्मस्थित आत्मसाक्षात्कारी ॥
हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ ।

ईशकृपा बिन गुरु नहीं, गुरु बिना नहीं ज्ञान ।
ज्ञान बिना आत्मा नहीं, गावहिं वेद पुरान ॥
जानने को साधक की कोटि, सत्तर दिन तक हुई कसौटी ।
कंचन को अग्नि में तपाया, गुरु ने आसुमल बुलवाया ॥
कहा गृहस्थ हो कर्म करना, ध्यान भजन घर पर ही करना ।
आज्ञा मानी घर पर आये, पक्ष में मोटी कोरल धाये ॥
नर्मदा तट पर ध्यान लगाये, लालजी महाराज अति हरषाये ।
भगवत्प्रीति देख मन भाये, दत्त-कुटीर में सादर लाये ॥
उमड़ा प्रभु प्रेम का चसका, अनुष्ठान चालीस दिवस का ।
मरे छः शत्रु स्थिति पायी, ब्रह्मनिष्ठता सहज समायी ॥
शुभाशुभ सम रोना गाना, ग्रीष्म ठंड मान औ' अपमाना ।
तृप्त हो खाना भूख अरु प्यास, महल औ' कुटिया आसनिरास ।
भक्तियोग ज्ञान अभ्यासी, हुए समान मगहर औ' कासी ॥
हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ ।

भाव ही कारण ईश है, न स्वर्ण काठ पाषाण ।
सत चित आनंदरूप है, व्यापक है भगवान ॥
ब्रह्मेशान जनार्दन, सारद सेस गणेश ।
निराकार साकार है, है सर्वत्र भवेश ॥
हुए आसुमल ब्रह्माभ्यासी, जन्म अनेकों लागे बासी ।
दूर हो गयी आधि व्याधि, सिद्ध हो गयी सहज समाधि ॥
इक रात नदी तट मन आकर्षा, आयी जोर से आँधी वर्षा ।
बंद मकान बरामदा खाली, बैठे वहीं समाधि लगा ली ॥
देखा किसीने सोचा डाकू, लाये लाठी भाला चाकू ।
दौड़े चीखे शोर मच गया, टूटी समाधि ध्यान खिंच गया ॥

साधक उठा थे बिखरे केशा, राग द्वेष ना किंचित् लेशा ।
सरल लोगों ने साधु माना, हत्यारों ने काल ही जाना ॥
भैरव देख दुष्ट घबराये, पहलवान ज्यूँ मल्ल ही पाये ।
कामीजनों ने आशिक माना, साधुजन कीन्हें परनामा ॥
हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ ।
एक दृष्टि देखे सभी, चले शांत गम्भीर ।
सशस्त्रों की भीड़ को, सहज गये वे चीर ॥

माता आयी धर्म की सेवी, साथ में पत्नी लक्ष्मी देवी ।
दोनों फूट फूट के रोयी, रुदन देख करुणा भी रोयी ॥
संत लालजी हृदय पसीजा, हर दर्शक आँसू में भीजा ।
कहा सभीने आप जाइयो, आसुमल बोले कि भाइयों ॥
चालीस दिवस हुआ न पूरा, अनुष्ठान है मेरा अधूरा ।
आसुमल की तीव्र तितिक्षा, माँ पत्नी ने की परतीक्षा ॥
जिस दिन गाँव से हुई विदाई, जार जार रोये लोग-लुगाई ।
अमदावाद को हुए रवाना, मियाँगाँव से किया पयाना ॥
मुंबई गये गुरु की चाह, मिले वहीं पै लीलाशाह ।
परम पिता ने पुत्र को देखा, सूर्य ने घटजल में पेखा ॥
घटक तोड़ जल जल में मिलाया, जल प्रकाश आकाश समाया ।
निज स्वरूप का ज्ञान दढ़ाया, ढाई दिवस ब्रह्मानंद छाया ॥
हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ ।

आसोज सुद दो दिवस, संवत् बीस इक्कीस ।
मध्याह्न ढाई बजे, मिला ईस से ईस ॥
देह सभी मिथ्या हुई, जगत हुआ निस्सार ।
हुआ आत्मा से तभी, अपना साक्षात्कार ॥
परम स्वतंत्र पुरुष दर्शाया, जीव गया और शिव को पाया ।
ज्ञान लिया हूँ शांत निरंजन, लागू मुझे न कोई बंधन ॥
यह जगत सारा है नश्वर, मैं ही शाश्वत एक अनश्वर ।
नयन हैं दो पर दृष्टि एक है, लघु गुरु में वही एक है ॥
सर्वत्र एक किसे बतलाये, सर्वव्याप्त कहाँ आये जाये ।
अनंत शक्तिवाला अविनाशी, रिद्धि सिद्धि उसकी दासी ।
यदि वह संकल्प चलाये, मुर्दा भी जीवित हो जाये ॥
हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ ।

ब्राह्मी स्थिति प्राप्त कर, कार्य रहे ना शेष ।
मोह कभी ना ठग सके, इच्छा नहीं लवलेष ॥
पूर्ण गुरु किरपा मिली, पूर्ण गुरु का ज्ञान ।
आसुमल से हो गये, साँई आशाराम ॥
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति चेतें, ब्रह्मानंद का आनंद लेते ।
खाते पीते मौन या कहते, ब्रह्मानंद मस्ती में रहते ॥
रहो गृहस्थ गुरु का आदेश, गृहस्थ साधु करो उपदेश ।
किये गुरु ने वारे न्यारे, गुजरात डीसा गाँव पधारे ॥
मृत गाय दिया जीवन दाना, तब से लोगों ने पहचाना ।
द्वार पै कहते नारायण हरि, लेने जाते कभी मधुकरी ॥
तब से वे सत्संग सुनाते, सभी आर्ती शांति पाते ।
जो आया उद्धार कर दिया, भक्त का बेड़ा पार कर दिया ।
कितने मरणासन्न जिलाये, व्यसन मांस और मद्य छुड़ाये ॥
हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ ॥

एक दिन मन उकता गया, किया डीसा से कूच ।
आयी मौज फकीर की, दिया झोंपड़ा फूँक ॥
वे नारेश्वर धाम पधारे, जा पहुँचे नर्मदा किनारे ।
मीलों पीछे छोड़ा मंदर, गये घोर जंगल के अंदर ॥
घने वृक्ष तले पत्थर पर, बैठे ध्यान निरंजन का धर ।
रात गयी प्रभात हो आयी, बाल रवि ने सूरत दिखायी ॥
प्रातः पक्षी कोयल कूकंता, छूटा ध्यान उठे तब संता ।
प्रातर्विधि निवृत्त हो आये, तब आभास क्षुधा का पाये ॥
सोचा मैं न कहीं जाऊँगा, यहीं बैठकर अब खाऊँगा ।
जिसको गरज होगी आयेगा, सृष्टिकर्ता खुद लायेगा ॥
ज्यूँ ही मन विचार वे लाये, त्यूँ ही दो किसान वहाँ आये ।
दोनों सिर पर बाँधे साफा, खाद्य-पेय लिये दोनों हाथा ॥
बोले जीवन सफल है आज, अर्घ्य स्वीकारो महाराज ।
बोले संत और पै जाओ, जो है तुम्हारा उसे खिलाओ ॥
बोले किसान आपको देखा, स्वप्न में मार्ग रात को देखा ।
हमारा न कोई संत है दूजा, आओ गाँव करें तुम्हरी पूजा ॥
आशारामजी मन में धारे, निराकार आधार हमारे ।
पिया पेय थोड़ा फल खाया, नदी किनारे जोगी धाया ॥
इक दिन साबरमती तट आये, ऋषि-भूमि के स्पंदन पाये ।
बन गया मोक्ष कुटीर वहाँ पर, तीरथ बना संत को पाकर ॥

हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ ।

अमदावाद गुजरात में, है मोटेरा ग्राम ।
ब्रह्मनिष्ठ श्री संत का, यहीं है पावन धाम ॥
आत्मानंद में मस्त हैं, करें वेदांती खेल ।
भक्ति योग और ज्ञान का, सद्गुरु करते मेल ॥
साधिकाओं का अलग, आश्रम नारी उत्थान ।
नारी शक्ति जागृत सदा, जिसका नहीं बयान ॥
वटवृक्ष पर डाली दृष्टि, कर दी अपनी कृपा की वृष्टि ।
परिक्रमा इसकी जो करते, मनोकामना कारज फलते ॥
गुरुदर पर है सब कुछ मिलता, श्रद्धा से जीवन है खिलता ।
ब्रह्मज्ञानी की महिमा भारी, शरण पड़े उनकी बलिहारी ॥
गैस कांड विकराल घटा जब, काँप उठा भोपाल नगर तब ।
जहरी गैस की फैली हवाएँ, हजारों ने प्राण गँवाए ॥
आशारामजी के जो साधक, बचे सभी सद्गुरु थे रक्षक ।
गुरुमंत्र जो निशदिन जपते, वे न अकाल मृत्यु से मरते ॥
कहर सुनामी ने हो ढाया, बाढ़ अकाल भूकम्प हो आया ।
जब भी कोई आपदा आयी, गुरुवर ने सेवा पहुँचायी ॥
आशाओं के राम हमारे, कहलाते हैं 'बापू' प्यारे ।
बापू हैं योगी ब्रह्मवेत्ता, कृपाभिलाषी जन गण नेता ॥
अटलजी ने जब आशीष पाया, प्रधानमंत्री पद शोभाया ।
विपतकाल में अर्जी लगायी, सत्ता पूर्ण काल तक पायी ॥
हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई, बापू चाहें सबकी भलाई ।
कितनों को सन्मार्ग दिखाया, प्रभुप्रेम आनंद बरसाया ॥
हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ ।

गुरुनिंदक के संग से, होता सत्यानाश ।
गुरुनिंदा जो करै सुनै, पड़े वो यम की फाँस ॥
गुरुआज्ञा पालन करे, अन्य भावना त्याग ।
ब्रह्मज्ञान का लक्ष्य रहे, शिष्य वही बड़भाग ॥
गुरुमंत्र जपता रहे, करता जो नित ध्यान ।
गुरुसेवा में लगा रहे, निश्चित हो कल्याण ॥
घटना है गोधरा की न्यारी, दुनिया में चर्चित हुई भारी ।
आशारामजी का हेलिकॉप्टर, गिरा गोधरा की धरती पर ॥
पुर्जे चकनाचूर हो गये, और गगन में दूर उड़ गये ।

हजारों की भीड़ थी आयी, फिर भी किसीको खरौंच न आयी ॥
श्वेत ईंधन की फूटी टंकी, लगी आग बुझ गयी स्वयं ही ।
हादसा जब भी ऐसा हुआ है, ना कोई जीवित स्वस्थ बचा है ॥
बापू तुरत पंडाल पधारे, किया नृत्य हर्षित हुए सारे ।
चमत्कार था अजब अनोखा, दुनिया ने घर बैठे देखा ॥
हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ ।

लोगों ने यशगान किया, लख-लख किया बखान ।
दस सेकंड का हादसा, चमत्कार ये महान ॥
महाकाल को काल ने, शत शत किया प्रणाम ।
सर्वसमर्थ हैं सद्गुरु, समरथ है प्रभुनाम ॥
बालक वृद्ध और नर-नारी, सभी प्रेरणा पायें भारी ।
एक बार जो दर्शन पाये, शांति का अनुभव हो जाये ॥
नित्य विविध प्रयोग करायें, नादानुसंधान बतायें ।
नाभि से वे ओम कहलायें, हृदय से वे राम कहलायें ॥
सामान्य ध्यान जो लगायें, उन्हें वे गहरे में ले जायें ।
सबको निर्भय योग सिखायें, सबका आत्मोत्थान करायें ॥
लाखों के हैं रोग मिटाये, शोक करोड़ों के हैं छुड़ाये ।
अमृतमय प्रसाद जब देते, भक्त का रोग शोक हर लेते ॥
जिसने नाम का दान लिया है, गुरु अमृत का पान किया है ।
उनका योगक्षेम वे रखते, वे न तीन तापों से तपते ॥
धर्म कामार्थ मोक्ष वे पाते, आपद रोगों से बच जाते ।
सभी शिष्य रक्षा हैं पाते, सर्वव्याप्त सद्गुरु बचाते ॥
सचमुच गुरु हैं दीनदयाल, सहज ही कर देते हैं निहाल ।
वे चाहते सब झोली भर लें, निज आत्मा का दर्शन कर लें ॥
एक सौ आठ जो पाठ करेंगे, उनके सारे काज सरेंगे ।
रहें न चिंता दुःख निराशा, होंगी पूर्ण सभी अभिलाषा ॥
हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ हरिॐ ।

वराभयदाता सद्गुरु, परम हि भक्त कृपाल ।
निश्छल प्रेम से जो भजे, साँई करें निहाल ॥
मन में नाम तेरा रहे, मुख पे रहे सुगीत ।
हमको इतना दीजिये, रहे चरण में प्रीत ॥
